श्री हनुमान चालीसा

|| दोहा ||

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार ॥

|| चौपाई ||

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुँचित केसा ॥
हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे । काँधे मूँज जनेऊ साजे ॥
शंकर सुवन केसरी नंदन । तेज प्रताप महा जगवंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मनबसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सवाँरे ॥
लाय सजीवन लखन जियाए । श्री रघुबीर हरषि उर लाए ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावै । अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना । लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लिल्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही। जलधि लाँघि गए अचरज नाही ॥

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे। होत ना आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहु को डरना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तै कापै ॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै। महावीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरे सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥

संकट तै हनुमान छुडावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै ॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई। जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥

और देवता चित्त ना धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गुसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा।होय सिद्ध साखी गौरीसा ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

|| दोहा ||

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

॥ पवनसुत हनुमान की जय ॥

॥ उमापति महादेव की जय ॥

॥ बोलो रे भई सब सन्तन की जय ॥

BhaktiDeep